नारायण सिंह राणा

जल के संबंध में उपदेशात्मक वाक्य

भारतीय संस्कृति को अरण्य संस्कृति या पर्यावरण संस्कृति कहा जाता है, जिसमें पर्यावरण घटकों यानि हिस्सों-धरती, जल, अग्नि, आकाश, वायु को पंचमहाभूत कहा गया है।

इसमें सबसे पहला स्थान धरती का है। जिसे माँ का पवित्र एवं उच्च पद प्राप्त है। प्रातः काल उठने के उपरान्त धरती पर पैर रखने से पूर्व क्षमा याचना का यह श्लोक आज भी बड़े बुजुर्गो से सुना जा सकता है।

समुद्र बसने देवी, पर्वतस्तन मण्डले,
विष्णु पत्नी नमस्तुभ्यं पाद स्पर्श क्षमस्वमें।।

धरती के आर्शीवाद का दुर्गा सप्तसती के देवी कवच में इस प्रकार बखान किया जाता है।

यावद भूमण्डल घतै सशैल वन काननम्।
तावतिस्ठाति मेदिन्यां संतति पुत्र पौत्रिकी।।

अर्थात जब तक धरती में पहाड़, वन, वृक्ष, पौधे आदि रहेंगे तब तक मानव जाति भी बरकरार रहेगी।

भागीरथी सुखदायिनी मातस्तव जलमहिमा निगमे ख्यातः।
नाहं जाने तव महिमानं पाहि कृपामयि मामू ज्ञानम्।।

हे भागरथी तुम सब प्राणियों को सुख देती हो, हे माता वेदशास्त्रों में तुम्हारे जल का महात्म्य वर्णित है, मैं तुम्हारी महिमा कुछ नहीं जानता, हे दयामयी मुझ अज्ञानी की रक्षा करो।

गंगा का जल जो भी पी ले, वह दुःख में भी मुस्कराता है।
गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है।।
गंगेश्च यमुनेश्चैव, गोदावरी सरस्वती।
नर्वदे सिन्धु कावेरी जलस्मिन संनिधिम कुरूः।।

यहां पर उन नदियों के नाम गिनकर गुणगान किया जाता है जो सम्पूर्ण प्राणिमात्र का अनेक प्रकार से कल्याण करती हैं।

रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून।
पानी गये न उबरे मोती मानुष चून।।

देवी पुराण में कहा गया है कि जो लोग जल संचयन के लिए तालाब, जलाशय, कुआं आदि का निर्माण कराते हैं वे अथाह पुण्य के भागी होते हैं।

पानी की एक-एक बूंद की कीमत आपकी एक सांस की कीमत के बराबर है। इसे बचायें व बनाये रखिये।

इसके बिना नहीं जीवन की कल्पना इक पल।
समझो इसकी उपयोगिता ये अमृत तो है जल।।
जल संचय, जीवन संचय
जलस्रोत्र को बचाइये-आपको जीवन दान देंगे।

भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल विहारी वाजपेयी के शब्दों में ष्ब्ंजबी जीम त्ंपदष पानी को पकड़ो।

जल संरक्षण कीजिए, जल जीवन का सार।
जल न रहे यदि जगत में, जीवन है बेकार।।
जल को नहीं व्यर्थ करे कोई, जल का संरक्षण धर्म बने।
जल की महिमा समझना ही, मानव का सुन्दर कर्म बने।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्तांगतो पिवो,
यः स्मरेत पुण्डरी काक्ष सर्वाभ्यन्तरः शुचिः।।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुये शरीर की वाह्य एवं आंतरिक शुद्धि के निमित्त शरीर पर जल छिड़का जाता है तथा आचमनी पी जाती है।

पानी इंसान, जीव और फसल के लिए है। उसकी हिफाजत करें और बांटकर काम में लें।

जल ही जीवन, जल है धन, जान सा ही कर जल संरक्षण-कुरान

संपर्क करें:
नारायण सिंह राणा
बालावाला, निकट डोभाल निवास,
रायपुर गूलर घाटी रोड़
देहरादून (उत्तराखंड)
मो. 9458951973, 7895880319